पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज

पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र प्रयागराज द्वारा हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

(14.09.2021 से 28.09.2021)

पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ दिनांक 14.09.2021 को किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डा. बद्रीनारायण, निदेशक, गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज तथा केन्द्र प्रमुख डा. संजय सिंह के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस अवसर पर वार्षिक राजभाषा एवं विज्ञान व्याख्यान माला के अंतर्गत व्याख्यान देते हुए डा. नारायण ने हिंदी लोक समाज के संदर्भ में विवेक और विज्ञान विषय पर विस्तृत चर्चा की। साथ ही जनमानस को मातृभाषा के माध्यम से अपनी पहचान बनाने का संदेश दिया। उन्होने कहा कि हिंदी यद्यपि अभी विज्ञान की भाषा बनने की प्रक्रिया में है, किन्तु वैज्ञानिक शोध के भारतीय समाज में प्रसार हेतु सबसे सुयोग्य साधन है। कार्यक्रम में डा. नारायण तथा केन्द्र प्रमुख डा. संजय सिंह के साथ अन्य वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा डा. सत्येंद्र देव शुक्ल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी की लिखित पुस्तक "सामाजिक पर्यावरण" का विमोचन भी किया गया।

केन्द्र प्रमुख ने मुख्य अतिथि को धन्यवाद व्यक्त करते हुए हिंदी की उत्पत्ति से लेकर आज तक के सफर पर चर्चा करते हुए इसके प्रचार-प्रसार के माध्यम से परिचय कराया। साथ ही सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज जो देश अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते हैं वह विकास की कतार में सबसे आगे खड़े हैं। उन्होने वैज्ञानिकों और शोधार्थियों से अनुसंधान को मातृभाषा में सरल रूप से हितग्राहियों तक पहुंचाने का आह्वान किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनिता तोमर ने केन्द्र में चल रही परियोजनाओं से अवगत कराया तथा इनके कार्यों को यथोचित रूप से हिंदी में करने की बात कही।

केन्द्र की वैज्ञानिक एवं हिंदी अधिकारी डा. अनुभा श्रीवास्तव ने मातृभाषा हिंदी का परिचय देते हुए इसके प्रचलन की अधिकता हेतु हिंदी को लिखित तथा मौखिक हर रूप में सरकारी, गैर-सरकारी आदि स्थानों पर अत्यधिक रूप से प्रयोग करने से उनके लाभ पर चर्चा की। उद्घाटन कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालित करने में केन्द्र की वैज्ञानिक व हिंदी अधिकारी डा. अनुभा श्रीवास्तव ने महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा इसके आयोजन में वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डा. एस. डी. शुक्ला व रतन कुमार गुप्ता के निर्देशन में अंकुर श्रीवास्तव, चार्ली मिश्रा, अमन मिश्रा तथा फराज अहमद का विशेष सहयोग रहा।

हिंदी पखवाड़ा दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2021 के मध्य राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा- भाषण, त्वरित लेखन, श्रुतलेखन तथा काव्य पाठ आदि का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इसी क्रम में दिनांक 24.09.2021 को ''ग्रामीण आजीविका में अकाष्ठ वन उत्पादों का योगदान'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अंतर्गत राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह कुछ अनूठे अंदाज में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रख्यात कवियों के साथ केन्द्र प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। केन्द्र प्रमुख डा. संजय सिंह ने समारोह में आए प्रख्यात कवियों का स्वागत किया तथा हिंदी को कार्यालय के साथ सामाजिक स्तर पर अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया। राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन में प्रख्यात कवियों द्वारा हास्य तथा प्रेरणास्पद पंक्तियां प्रस्तुत की गयी। प्रख्यात कवियों ने स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से श्रोताओं को गुदगुदाया तथा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु आह्वान भी किया।

कवि नज़र इलाहाबादी के अंदाज में ''तीर्थराज संगम की दोनों नदियां गंगा व कालिन्दी हूं, छोड़ो ये सब, सुनो ध्यान से भारत की भाषा मै हिंदी हूं।'' इसी क्रम में कवि अना इलाहाबादी द्वारा शहर को समर्पित ''शहर का नाम बदला है, पुरानी याद ज़िन्दा है, दिलों में आज भी सबके इलाहाबाद ज़िन्दा है।'' विख्यात कवि जितेन्द्र मिश्र-जलज ने अपनी पंक्तियों में दुनिया को एक कहानी बताया तथा भारतीय ध्वज तिरंगा की शान में कुछ पंक्तियां कहीं। कवि लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता ने अपनी कुछ पंक्तियों के माध्यम से समाज को संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन नवीन सिन्हा ने बड़े ही अनूठे अंदाज में कुछ गुदगुदाती हुयी पंक्तियों के माध्यम से किया।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि रंगकर्मी प्रवीण शेखर के साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सुजीत कुमार सिंह, बृजेश पाण्डेय, अमरेन्द्र कुमार त्रिपाठी आदि गणमान्य श्रोता शामिल रहे। समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए विजेताओं को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार वितरित किया गया। डा. अनुभा श्रीवास्तव, वैज्ञानिक एवं हिंदी अधिकारी के नेतृत्व में हिंदी पखवाड़ा सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में डा. अनिता तोमर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. कुमुद दूबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. एस. डी. शुक्ला, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, रतन कुमार गुप्ता, तकनीकी अधिकारी, हरीश कुमार, अवर श्रेणी लिपिक तथा कार्यालय के समस्त कर्मचारियों के साथ विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोधार्थीगण आदि ने भाग लिया।

उदघाटन समारोह की कुछ झलकियाँ

हिंदी को भारतीय संस्कृति की
आत्मा कहा जाता है.....
हिंदी पखवाड़ा
(14.09.2021-28.09.2021)
पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज
FRCER

हिंदी को भारतीय संस्कृति की
आत्मा कहा जाता है.....
हिंदी पखवाड़ा
(14.09.2021-23.09.2021)
पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

समापन सत्र की कुछ झलकियाँ

अना इलाहाबादी
डॉ संजय सिंह

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
28 सितम्बर 2021
FRCER

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
28 सितम्बर 2021
प्रारम्भ : 3 बजे से
डॉ संजय सिंह
नवीन सिन्हा
लक्ष्मण गुप्ता

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
28 सितम्बर 2021
प्रारम्भ : 3 बजे से
विनय सेन सिंह
अना इलाहाबादी
जितेन्द्र मिश्र
लक्ष्मण गुप्ता
डॉ अनुभा श्रीवास्तव

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
28 सितम्बर 2021
प्रारम्भ : 3 बजे से

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
28 सितम्बर 2021
प्रारम्भ : 3 बजे से
विनड़ सेन सिंह
अना इलाहाबादी
डा अनुभा श्रीवास्तव
नवीन सिन्हा
लक्ष्मण गुप्ता
हिन्दी पखवाड़ा

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
28 सितम्बर 2021
प्रारम्भ : 3 बजे से
विनड़ सेन सिंह
अना इलाहाबादी
नवीन सिन्हा
लक्ष्मण गुप्ता

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी
समापन समारोह
28 सितम्बर 2021
प्रारम्भ : 3 बजे से
विनम्र सेन सिंह
जितेन्द्र मिश्र
नवीन सिन्हा
डॉ अनुभा श्रीवास्तव
अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज

राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन
हिन्दी
समारोह
28 सितम्बर 2021
प्रारम्भ : 3 बजे से
नजर इलाहाबादी
विनम्र सेन सिंह
संजय सिंह
डॉ अनुभा श्रीवास्तव
जितेन्द्र मिश्र
अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश - 211002
एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

राजभाषा एवं विज्ञान व्याख्यानमाला का आरम्भ

हिन्दी वैज्ञानिक शोध के भारतीय समाज प्रसार हेतु सबसे सुयोग्य साधन : डॉ नारायण

इलाहाबाद एक्सप्रेस

प्रजागराज । दिनांक 14.09.2021 को पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा हिन्दी पखवाड़ा (14.09.2021 से 28.09.2021) की शुरूआत की गयी। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि बद्रीनारायण, निदेशक, गोविन्द बल्लभ पन्त, सामाजिक विज्ञान संस्थान,झूँसी , प्रयागराज तथा केन्द्र प्रमुख के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस अवसर पर वार्षिक राजभाषा एवं विज्ञान व्याख्यानमाला के अन्तर्गत व्याख्यान देते हुए डा0 नारायण ने हिन्दी लोक समाज के सन्दर्भ में विवेक और विज्ञान पर विस्तृत चर्चा की साथ ही जनमानस को मातृभाषा के माध्यम से अपनी पहचान बनाने का सन्देश दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी यद्यपि अभी

विज्ञान की भाषा बनने की प्रक्रिया में है किन्तु वैज्ञानिक शोध के भारतीय समाज प्रसार हेतु सबसे सुयोग्य साधन है। कार्यक्रम में डा0 नारायण तथा केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह के साथ अन्य वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा डा0 सत्येंद्र देव शुक्ल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी की लिखित, केन्द्र से प्रकाशित पुस्तक (सामाजिक पर्यावरण) का विमोचन भी किया गया। केन्द्र प्रमुख ने मुख्य अतिथि को धन्यवाद व्यक्त करते हुए हिन्दी की उत्पत्ति से लेकर आज तक के सफर पर चर्चा करते हुए इसके प्रचार-प्रसार के माध्यम से परिचय कराया साथ ही सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज जो देश अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते हैं वह विकास की कतार में सबसे आगे खड़े हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों और शोधार्थियों से अपने अनुसंधान को मातृभाषा में सरल रूप से हितग्राहियों तक पहुँचाने का आह्वान किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अनीता तोमर ने केन्द्र में चल रही परियोजनाओं से अवगत कराया, तथा इनके कार्यों को यथोचित रूप से हिन्दी में करने की बात कही। केन्द्र की वैज्ञानिक हिन्दी अधिकारी डा0 अनुभा श्रीवास्तव ने मातृभाषा हिन्दी का परिचय देते हुए इसके प्रचलन की अधिकता हेतु हिन्दी को लिखित तथा मौखिक हर रूप में सरकारी गैर - सरकारी आदि स्थानों पर अत्यधिक रूप से प्रयोग करने से उनके लाभ पर चर्चा की। उद्घाटन कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालित करने में केन्द्र की वैज्ञानिक व हिन्दी अधिकारी डा0 अनुभा श्रीवास्तव ने महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा इसके आयोजन में तकनीकी अधिकारी डा0 एस0 डी0 शुक्ला व रतन कुमार गुप्ता के निर्देशन में अंकुर श्रीवास्तव, चार्ली मिश्रा, अमन मिश्रा तथा फ़राज़ अहमद का विशेष सहयोग रहा।

हिन्दुस्तान
प्रयागराज • बुधवार • 15 सितंबर 2021
04

ालय में हिंदी में हुई सभी कार्यवाही

आयोजन

अपनी मातृभाषा का प्रयोग करने वाले देश विकास में आगे

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र की ओर से हिंदी पखवाड़ा की शुरुआत मंगलवार से हुई। गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. बद्रीनारायण और पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र के प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। वार्षिक राजभाषा एवं विज्ञान व्याख्यानमाला में डॉ. बद्री नारायण ने कहा कि हिंदी अभी विज्ञान की भाषा बनने की प्रक्रिया में है, किन्तु वैज्ञानिक शोध से भारतीय समाज के लिए यह सबसे सुयोग्य भाषा है। डॉ. संजय सिंह, डॉ. अनीता तोमर, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव, डॉ. एसडी शुक्ला आदि ने विचार व्यक्त किया। वहीं हिन्दी पखवाड़ा के दौरान सामाजिक पर्यावरण पुस्तक का विमोचन मुख्यअतिथि डॉ. ब्रदी नारायण और केंद्र प्रमुख संजय सिंह ने किया। वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. सत्येंद्र देव शुक्ला ने यह पुस्तक लिखी है।

राजभाषा एवं विज्ञान व्याख्यानमाला का आरम्भ

प्रजागराज(नि.सं.)। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा हिन्दी पखवाड़ा (14.09.2021 से 28.09.2021) की शुरूआत की गयी। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि बद्रीनारायण, निदेशक, गोविन्द बल्लभ पन्त, सामाजिक विज्ञान संस्थान, झूसी, प्रयागराज तथा केन्द्र प्रमुख के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस अवसर पर वार्षिक राजभाषा एवं विज्ञान व्याख्यानमाला के अंतर्गत व्याख्यान देते हुए डा0 नारायण ने हिंदी लोक समाज के संदर्भ में विवेक और विज्ञान पर विस्तृत चर्चा की साथ ही जनमानस को मातृभाषा के माध्यम से अपनी पहचान बनाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी यद्यपि अभी विज्ञान की भाषा बनने की प्रक्रिया में है किन्तु वैज्ञानिक शोध के भारतीय समाज प्रसार हेतु सबसे सुयोग्य साधन है। कार्यक्रम में डा0 नारायण तथा केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह के साथ अन्य वरिष्ठ

वैज्ञानिकों द्वारा डा0 सत्येंद्र देव शुक्ल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी की लिखित, केन्द्र से प्रकाशित पुस्तक 'सामाजिक पर्यावरण' का विमोचन भी किया गया। केन्द्र प्रमुख ने मुख्य अतिथि को धन्यवाद व्यक्त करते हुए हिन्दी की उत्पत्ति से लेकर आज तक के सफर पर चर्चा करते हुए इसके प्रचार-प्रसार के माध्यम से परिचय कराया साथ ही सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज जो देश अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते है वह विकास की कतार में सबसे आगे खड़े हैं। उन्होने वैज्ञानिकों और शोधाथियों से अपने अनुसंधान को मातृभाषा में सरल रूप से हितग्राहियों तक पहुँचाने का आह्वान किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अनिता तोमर ने केन्द्र में चल रही परियोजनाओं से अवगत कराया तथा इनके कार्यों को यथोचित रूप से हिन्दी में करने की बात कही। केन्द्र की वैज्ञानिक हिन्दी अधिकारी डा0 अनुभा श्रीवास्तव ने मातृभाषा हिन्दी का परिचय देते हुए इसके प्रचलन की अधिकता हेतु हिंदी को लिखित तथा मौखिक हर रूप में सरकारी गैर - सरकारी आदि स्थानों पर अत्यधिक रूप से प्रयोग करने से उनके लाभ पर चर्चा की। उद्घाटन कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालित करने में केन्द्र की वैज्ञानिक व हिन्दी अधिकारी डा0 अनुभा श्रीवास्तव ने महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा इसके आयोजन में तकनीकी अधिकारी डा0 एस0 डी0 शुक्ला व रतन कुमार गुप्ता के निर्देशन में अंकुर श्रीवास्तव, चार्ली मिश्रा, अमन मिश्रा तथा फ़राज़ अहमद का विशेष सहयोग रहा।

हिन्दी पखवाड़ा का हास्य कवि सम्मेलन के साथ समापन

हंसते गुदगुदाते हुए हिंदी पखवाड़ा का समापन

प्रयागराज । पारि - पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र प्रयागराज द्वारा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अंतर्गत राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह कुछ अनूठे अंदाज में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रख्यात कवियों के साथ केन्द्र प्रमुख तथा वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह ने समारोह में आए कवियों का स्वागत किया तथा हिंदी को कार्यालय तथा सामाजिक स्तर पर अधिकाधिक प्रयोग पर हेतु बल दिया। राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन में प्रख्यात कवियों द्वारा हास्य तथा प्रेरणास्पद पंक्तियां प्रस्तुत की गयी। प्रख्यात कवियों ने स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से श्रोताओं को गुदगुदाया तथा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु आह्वान भी किया। कवि नजर इलाहाबादी के अंदाज में -तीर्थराज संगम की दोनों नदियाँ गंगा व कालिन्दी हूं, छोड़ो ये सब, सुनो ध्यान से भारत की भाषा मै हिंदी हूं।- इसी क्रम में कवि अना इलाहाबादी द्वारा शहर को समर्पित पंक्ति -शहर का नाम बदला है, पुरानी याद जिन्दा है, दिलों में आज भी सबके इलाहाबाद जिन्दा है।- विख्यात कवि जितेन्द्र मिश्र, जलज ने अपनी पंक्तियों में दुनिया को एक कहानी बताया तथा भारतीय ध्वज तिरंगा की शान में कुछ पंक्तियाँ कहीं। कवि लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता ने अपनी कुछ पंक्तियों के माध्यम से समाज को संदेश दिया -वक्त की नब्ज पे पकड़ रखना, हाथ में अपने ये हुनर रखना,..... स्याह हो रात चाहे जितनी भी, जेहन में अपने तुम सहर रखना। कार्यक्रम का संचालन नवीन सिन्हा ने बड़े ही अनूठे अंदाज में कुछ गुदगुदाती हुयी पंक्तियों के माध्यम किया। कार्यक्रम विशिष्ट अतिथि रंगकर्मी प्रवीण शेखर के साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सुजीत कुमार सिंह ब्रिजेश पांडेय , अमरेन्द्र कुमार त्रिपाठी आदि गणमान्य श्रोता शामिल रहे। समापन समारोह में हिंदी पखवाड़ा दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2021 के मध्य राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा भाषण, त्वरित लेखन, श्रुतलेखन तथा काव्य पाठ आदि का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सभी प्रतियोगिताओं के लिए विजेताओं को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार वितरित किया गया। डा0 अनुभा श्रीवास्तव, वैज्ञानिक एवं हिंदी अधिकारी के नेतृत्व में हिंदी पखवाड़ा सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में डा0 एस0 डी0 शुक्ला, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, रतन कुमार गुप्ता, तकनीकी अधिकारी तथा कार्यालय के समस्त कर्मचारियों के साथ विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोधार्थीगण आदि मौजूद रहे।

हंसते गुदगुदाते हुए हिंदी पखवाड़ा का समापन

प्रयागराज (नि.सं)। मंगलवार को पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अंतर्गत राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह कुछ अनूठे अंदाज में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रख्यात कवियों के साथ केन्द्र प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह ने समारोह में आए प्रख्यात कवियों का स्वागत किया तथा हिंदी को कार्यालय के साथ सामाजिक स्तर पर अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया। राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन में प्रख्यात कवियों द्वारा हास्य तथा प्रेरणास्पद पंक्तियां प्रस्तुत की गयी। प्रख्यात कवियों ने स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से श्रोताओं को गुदगुदाया तथा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु आह्वान भी किया। कवि नज़र इलाहाबादी के अंदाज में ''तीर्थराज संगम की दोनों नदियां गंगा व कालिन्दी हूं, छोड़ो ये सब, सुनो ध्यान से भारत की भाषा मै हिंदी हूं।'' इसी क्रम में कवि अना इलाहाबादी द्वारा शहर को समर्पित ''शहर का नाम बदला है, पुरानी याद ज़िन्दा है, दिलों में आज भी सबके इलाहाबाद ज़िन्दा है।'' विख्यात कवि जितेन्द्र मिश्र-जलज ने अपनी पंक्तियों में दुनिया को एक कहानी बताया तथा भारतीय ध्वज तिरंगा की शान में कुछ पंक्तियां कहीं। कवि लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता ने अपनी कुछ पंक्तियों के माध्यम से समाज को संदेश दिया ''वक्त की नब्ज़ पे पकड़ रखना, हाथ में अपने ये हुनर रखना.....स्याह हो रात चाहे जितनी भी, ज़ेहन में अपने तुम सहर रखना।'' कार्यक्रम का संचालन नवीन सिन्हा ने बड़े ही अनूठे अंदाज में कुछ गुदगुदाती हुयी पंक्तियों के माध्यम से किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि रंगकर्मी प्रवीण शेखर के साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सुजीत कुमार सिंह, बृजेश पाण्डेय, अमरेन्द्र कुमार त्रिपाठी आदि गणमान्य श्रोता शामिल रहे।

पारि - पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र की ओर से आयोजन, हास्य एवं व्यंग रचनाओं से सामाजिक गतिविधियों पर डाला प्रकाश

हास्य कवि सम्मेलन के साथ हिंदी पखवाड़े का समापन

प्रयागराज | संवाददाता

पारि - पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र की ओर से हिंदी पखवाड़ा का समापन मंगलवार को हुआ। समापन समारोह पर हास्य कवि सम्मेलन का आयोजित किया गया। स्वागत केंद्र प्रमुख डा संजय सिंह ने किया। हास्य एवं व्यंग्य की रचनाओं से कलमकारों ने सामाजिक गतिविधियों को प्रस्तुत किया।

नजर इलाहाबादी ने तीर्थराज संगम की दोनों नदियां गंगा व कालिन्दी हूं, छोड़ो ये सब, सुनो ध्यान से भारत की भाषा मै हिंदी हूं को प्रस्तुत किया। अना इलाहाबादी शहर का नाम बदला है, पुरानी याद जिंदा है, दिलों में आज भी सबके इलाहाबाद जिंदा है को प्रस्तुत कर तालियां बटोरी। जितेंद्र मिश्र, जलज ने अपनी पंक्तियों में दुनिया को एक कहानी बताया तथा भारत के तिरंगे की शान में पंक्तियां पढ़ी। लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता ने काव्य पाठ किया। संचालन नवीन सिन्हा ने किया। केंद्र प्रमुख ने बताया कि 14 से 28 सितंबर तक हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। प्रतियोगिताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार दिया गया। विशिष्ट अतिथि रंगकर्मी प्रवीण शेखर, सुजीत कुमार सिंह, बृजेश पांडे, अमरेंद्र कुमार त्रिपाठी, डॉ, अनुभा श्रीवास्तव आदि रहे।

हिंदी पखवाड़ा के समापन पर कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। • हिन्दुस्तान

हिंदी भाषा के व्यवहारिक विकास पर दें जोर

प्रयागराज। एमएनएनआइटी में मंगलवार को हिंदी पखवाड़े का समापन हुआ। इस दौरान आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो नई दिल्ली के संयुक्त निदेशक विनोद कुमार संदलेश ने भाषा के व्यवहारिक एवं प्रयोगिक स्वरूप को विकसित करने के लिए व्यापक अभियान चलाने पर जोर दिया। विशिष्ट अतिथि अजय मलिक ने राजभाषा के कार्यान्वयन पक्ष की व्यवहारिक स्थिति की व्याख्या प्रस्तुत की। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक प्रो. सुरेश शर्मा, हिंदी पखवाड़ा समिति के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार सिंह, ज्ञानेन्द्र तिवारी, प्रो. एमएम गोरे, प्रकाश चन्द्र मिश्र आदि ने भी विचार साझा किए।

हिन्दी पखवाड़ा का हास्य कवि सम्मेलन के साथ समापन

प्रयागराज(नि.सं.)। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अंतर्गत राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह कुछ अनूठे अंदाज में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रख्यात कवियों के साथ केन्द्र प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह ने समारोह में आए प्रख्यात कवियों का स्वागत किया तथा हिंदी को कार्यालय के साथ सामाजिक स्तर पर अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया। राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन में प्रख्यात कवियों द्वारा हास्य तथा प्रेरणास्पद पंक्तियां प्रस्तुत की गयी। प्रख्यात कवियों ने स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से श्रोताओं को गुदगुदाया तथा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु आह्वान भी किया। कवि नज़र इलाहाबादी के अंदाज में "तीर्थराज संगम की दोनों नदियां गंगा व कालिन्दी हूं, छोड़ो ये सब, सुनो ध्यान से भारत की भाषा मैं हिंदी हूं।" इसी क्रम में कवि अना

इलाहाबादी द्वारा शहर को समर्पित "शहर का नाम बदला है, पुरानी याद ज़िन्दा है, दिलों में आज भी सबके इलाहाबाद ज़िन्दा है।" विख्यात कवि जितेन्द्र मिश्र-जलज ने अपनी पंक्तियों में दुनिया को एक कहानी बताया तथा भारतीय ध्वज तिरंगा की शान में कुछ पंक्तियां कहीं। कवि लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता ने अपनी कुछ पंक्तियों के माध्यम से समाज को संदेश दिया "वक्त की नब्ज़ पे पकड़ रखना, हाथ में अपने ये हुनर रखना.....स्याह हो रात चाहे जितनी भी, जे.हन में अपने तुम सहर रखना।" कार्यक्रम का संचालन नवीन सिन्हा ने बड़े ही अनूठे अंदाज में कुछ गुदगुदाती हुयी पंक्तियों के माध्यम से किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि रंगकर्मी प्रवीण शेखर के साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सुजीत कुमार सिंह, बृजेश पाण्डेय, अमरेन्द्र कुमार त्रिपाठी आदि गणमान्य श्रोता शामिल रहे। समापन समारोह में हिंदी पखवाड़ा दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2021 के मध्य राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न-प्रतियोगिताओं यथा भाषण, त्वरित लेखन, श्रुतलेखन तथा काव्य पाठ आदि का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। विभिन्न-प्रतियोगिताओं के लिए विजेताओं को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार वितरित किया गया। डा0 अनुभा श्रीवास्तव, वैज्ञानिक एवं हिंदी अधिकारी के नेतृत्व में हिंदी पखवाड़ा सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में डा0 एस0 डी0 शुक्ला, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, रतन कुमार गुप्ता, तकनीकी अधिकारी तथा कार्यालय के समस्त कर्मचारियों के साथ विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोधार्थीगण आदि मौजूद रहे।

हिन्दी पखवाड़ा का हास्य कवि सम्मेलन के साथ समापन

प्रयागराज(नि.सं.)। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अंतर्गत राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह कुछ अनूठे अंदाज में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रख्यात कवियों के साथ केन्द्र प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह ने समारोह में आए प्रख्यात कवियों का स्वागत किया तथा हिंदी को कार्यालय के साथ सामाजिक स्तर पर अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया। राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन में प्रख्यात कवियों द्वारा हास्य तथा प्रेरणास्पद पंक्तियां प्रस्तुत की गयी। प्रख्यात कवियों ने स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से श्रोताओं को गुदगुदाया तथा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु आह्वान भी किया। कवि नज़र इलाहाबादी के अंदाज में "तीर्थराज संगम की दोनों नदियां गंगा व कालिन्दी हूं, छोड़ो ये सब, सुनो ध्यान से भारत की भाषा मैं हिंदी हूं।" इसी क्रम में कवि अना इलाहाबादी द्वारा शहर को समर्पित "शहर का नाम बदला है, पुरानी याद ज़िन्दा है, दिलों में आज भी सबके इलाहाबाद ज़िन्दा है।" विख्यात कवि जितेन्द्र मिश्र-जलज ने अपनी पंक्तियों में दुनिया को एक कहानी बताया तथा भारतीय ध्वज तिरंगा की शान में कुछ पंक्तियां कहीं। कवि लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता ने अपनी कुछ पंक्तियों के माध्यम से समाज को संदेश दिया "वक्त की नब्ज़ पे पकड़ रखना, हाथ में अपने ये हुनर रखना स्याह हो रात चाहे जितनी भी, जे.हन में अपने तुम सहर रखना।" कार्यक्रम का संचालन नवीन सिन्हा ने बड़े ही अनूठे अंदाज में कुछ गुदगुदाती हुयी पंक्तियों के माध्यम से किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि रंगकर्मी प्रवीण शेखर के साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सुजीत कुमार सिंह, बृजेश पाण्डेय, अमरेन्द्र कुमार त्रिपाठी आदि गणमान्य श्रोता शामिल रहे।

कविताओं के जरिए किया गया हिंदी को बढ़ावा देने का आह्वान

हिंदी पखवाड़े के समापन पर आयोजित किया गया कवि सम्मेलन

प्रयागराज। कवि सम्मेलन में मंगलवार को रचनाकारों ने अपनी कविताओं के जरिए राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने का आह्वान किया। हिंदी की गरिमा, महिमा पर आधारित कविताएं पढ़ी गईं। यह कवि सम्मेलन पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र की ओर से हिंदी पखवाड़े के समापन पर आयोजित किया गया।

शुरुआत कवियों के साथ केंद्र प्रमुख डॉ संजय सिंह और अन्य वैज्ञानिकों ने दीप प्रज्जवलित करके किया। उन्होंने कार्यालयीय कामकाज के साथ ही सामाजिक स्तर पर हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया। राजभाषा प्रशस्ति कवि सम्मेलन में हास्य रचनाओं के साथ ही कई प्रेरणाप्रद कविताएं पढ़ी गईं। कवि नजर इलाहाबादी के अलावा अना इलाहाबादी ने प्रयागराज की आध्यात्मिक , सांस्कृतिक गरिमा का कविताओं के जरिए बखान किया। शहर का नाम बदला है/ पुरानी याद जिंदा है... जैसी पंक्तियों के जरिए उन्होंने वाहवाही बटोरी। इनके

अलावा जितेंद्र मिश्र जलज,लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता की कविताएं खूब सराही गईं। संचालन नवीन सिन्हा ने किया। बतौर विशिष्ट अतिथि रंगकर्मी प्रवीण शेखर उपस्थित रहे। इनके अलावा सुजीत कुमार सिंह, बृजेश पांडेय, अमरेंद्र कुमार त्रिपाठी ने भी काव्यपाठ किया। इसके बाद भाषण, त्वरित लेखन, काव्य पाठ प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर डॉ. एसडी शुक्ला, रतन कुमार गुप्ता समेत कई शोधार्थी मौजूद रहे। ब्यूरो